International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 862-863

1857 का गदर भारतेन्दु युग एवं राष्ट्रीय भावना

डॉ0 अजय कुमार शुक्ल
ग्राम–मरवट, पो0भदावल, जिला' बस्ती, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

ब्रिटिश शासन के दौरान और उसके उपरान्त कई ऐसे इतिहासकार हुए जिनको भारतीय सन्दर्भ में राष्ट्रीयता की अवधारणा आधुनिक काल की देन दिखायी पड़ती है। यह बात केवल राष्ट्रीयता के आधुनिक अर्थ तक सीमित है। विस्तार से देखें तो अथर्ववेद में 'राष्ट्र सूक्त' और 'मातृभूमि सूक्त' राष्ट्रीय चेतना के जागरण का प्रस्थान बिन्दु है। जिसमें कहा गया है कि राष्ट्र प्रेम हेतु आवश्यक है कि राष्ट्रवासियों के हृदय में राष्ट्र की भूमि और उसके ऊपर छाये आकाश से निकट का भावात्मक सम्बन्ध जोड़ा जाय। फलतः एक नैसर्गिक प्रेम स्वतः उत्पन्न हो जायेगा–

माता भूमिः पुत्रोऽहंपृथिव्याः
पर्जन्यः पिता स उन प्रिपर्तुः।[1]

राष्ट्रवासियों में आत्मगौरव, आत्मविश्वास जागरण हेतु त्याग और बलिदान तथा वीरत्व के संचार हेतु देश के गौरवमय इतिहास पूर्व पुरूषों के पराक्रम उनके गौरवपूर्ण कृत्यों का स्मरण और गायन अनिवार्य है। आधुनिक काल (जिसकी शुरूआत भारतेन्दु युग से होती है) के शैशव भारत में राष्ट्रीय चेतना के जागरण के उपक्रम में भारतेन्दु हरिश्चन्द, राधाकृष्ण दास, चौधरी बदरीनारायण 'प्रेमधन', प्रताप नारायण मिश्र सरीखे लेखको ने देश के अतीत का गौरव गान किया है। यथा–हमारो उत्तम भारत देश (राधाचरण गोस्वामी) हा हा भारत दुर्दुशा न देखी जायी (भारतेन्दु)।

स्वतंत्रता की प्रथम लड़ाई जो सन् 1857 में लड़ी गयी वह प्रत्यक्ष रूप से असफल हुई परन्तु उसकी अन्तर्वस्तु बाद के राष्ट्रवादी क्रांतिकारियों एवं बुद्धिजीवियों के लिए मील का पत्थर साबित हुई। हिन्दी साहित्य में पुनर्जागरण के अग्रदूत भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र और उनके मण्डल तथा उस समूचे युग की संपृक्ति एवं संसक्ति 1857 की लड़ाई से कितनी और कहाँ तक थी यह अध्ययन और शोध का विषय है। चूँकि यह युग प्रथम महासंग्राम का सबसे नजदीकी युग है अतः यहाँ संग्राम प्रभावित स्वर स्पष्ट सुनाई पड़ना चाहिए था। कई विद्वानों का मत है कि भारतेन्दु युगीन साहित्य में ऐसा नहीं दिखायी देता। हितेन्द्र पटेल का कथन है कि–''अगर 1857 से भारतेन्दु युगीन रचनाकारों के सम्पर्क को देखा जाय तो यह स्पष्ट हो जाता है कि भारतेन्दु युगीन रचनाकार जिस नवजागरण को जन्म दे रहे थे, उसका कोई सम्पर्क 1857 के संग्राम से नहीं था।''[2] वहीं दूसरी तरफ डॉ0 राम विलास शर्मा के मतानुसार प्रथम स्वाधीनता संग्राम हिन्दी प्रदेश के नवजागरण की पहली मंजिल है तो दूसरी मंजिल भारतेन्दु युग।3

डा0 शर्मा के मत से सहमत होते हुए यह कहना उचित ही है कि जातीय बोध, लोक भाषा, लोक संगीत के जिन तत्वों के आधार पर डॉ0 शर्मा इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं वह 1857 के सन्दर्भ में अजीमुल्ला खान द्वारा रचित झंडागान से स्पष्ट हो जाता है–

''हम हैं इसके मालिक हिन्दुस्तान हमारा,
पाक वतन है कौम का, जन्नत से भी प्यारा,
ये है हमारी मिल्कियत, हिन्दुस्तान हमारा
इसकी ही नीयत से रोशन है जग सारा।
कितना कदीम कितना नईम, सब दुनिया से न्यारा,
करती है जरखेज जिसे गंगो जमुन की धारा
आज शहीदों ने है तुमको अहले वतन ललकारा
तोड़ो गुलामी कि जंजीरे बरसाओ अंगारा।।''[4]

डॉ0 शर्मा ने भारतेन्दु युग पर 1857 के संग्राम की प्रभाव छाया और तद्जन्य राष्ट्रीयता को रेखांकित किया है। प्रमाण यह कि उक्त संग्राम के दस वर्षों बाद ही 1867 में भारतेन्दु बाबू ने कविवचन सुधा में लेवी–प्राण लेबी लेख ब्रिटिश सत्ता के विरोध में लिखा। निष्कर्ष यही है कि भारतेन्दु युग का साहित्य व्यापक स्तर पर गदर से प्रभावित था और राष्ट्रीय चेतना के आधुनिक यान का प्रथम वाहक है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने विक्टोरियायी शासन के प्रति कृतज्ञ होते हुए भी राष्ट्रप्रेम का जो द्वीप प्रज्ज्वलित कर रखा था उसकी लौ से निकली एक किरण आजादी के दीवानों के लिए पथ–प्रदर्शक बन गयी–

सोई भारत भूमि भई सब भाँति दुखारी
रह्यौ न एकहु वीर सहस्रन कोस मंझारी
होत सिंह कौ नाद जवन भारत बन मांही
तहँ अब–ससक सियार स्वान खर आदि लखाहीं।।[5]

इस हताश निराश दशा पर क्षोभ व्यक्त करते हुए उन्होंने प्रकारान्तर से देशवासियों को जगाने एवं उत्साहित करने का प्रयन्त किया है। 'भारत वर्षोन्नति कैसे हो सकती है' नामक निबन्ध में भारतेन्दु ने भारतीयों में ' का चुप साधि रह्यो बलवाना' का मनोविज्ञान साधा है। वे जवानों को ललकारते हुए राष्ट्रभावना की प्रखर अभिव्यक्ति इस गीत में करते हैं–

दमा दमा सनाई बजाओ बजाओ
अरे राग मारू सुनाओ सुनाओ
कहाँ वीर हौ वेगि धाओ सु धाओ
अरे वीरता को दिखाओ दिखाओ।
अरे शत्रु को सीस काटो सु काटो
अरे कायरों दौरि डॉटो सु डॉटो।
निसाना सवै लै लगाओ लगाओ

अरे बन्दूकैं चलाओ चलाओ।।[6]

यहाँ भारतेन्दु जी ने 'कायर' कहकर वीरत्व को जगाने के लिए पुरूषवादी मनोविज्ञान का प्रयोग किया है। किसी को नपुंसक कहकर उसके पुरूषत्व को जगाने का यह पुराना भारतीय नुस्खा है।

राष्ट्रहित की यह चिन्ता मात्र भारतेन्दु में ही नहीं उस दौर के प्रमुख कवि राधाचरण गोस्वामी में भी है। उन्होंने 'हमारों उन्नत भारत देश' में उन्होंने देश की दयनीय दशा पर क्षोभ व्यक्त किया था–

''मैं हाय हाय दे धाय पुकारौं रोई
भारत की डूबी नाव उबारौ कोई।।''[7]

संक्षेप में कहा जाय तो राष्ट्र जागरण, राष्ट्रप्रेम एवं राष्ट्रीय संघर्ष का जो बीजवपन भारतेन्दु मण्डल ने किया वह आगे जाकर द्विवेदी जी के 'बीजवपन काल' में पुष्पित, पल्लवित और पुरिपुष्ट हुआ।

संदर्भ सूची

1. अथर्ववेद 12.1.12
2. हितेन्दु पटेल, आजकल, मई 2007 पृ0 10
3. डॉ0 राम विलास शर्मा, भारतेन्दु युग और हिन्दी नवजागरण
4. अजीमुल्ला खाँ–पयामे आजादी
5. भारतेन्दु विजयिनी विजय वैजन्ती,
6. वही
7. राधा चरण गोस्वामी–हमारो उत्तम भारत देश।